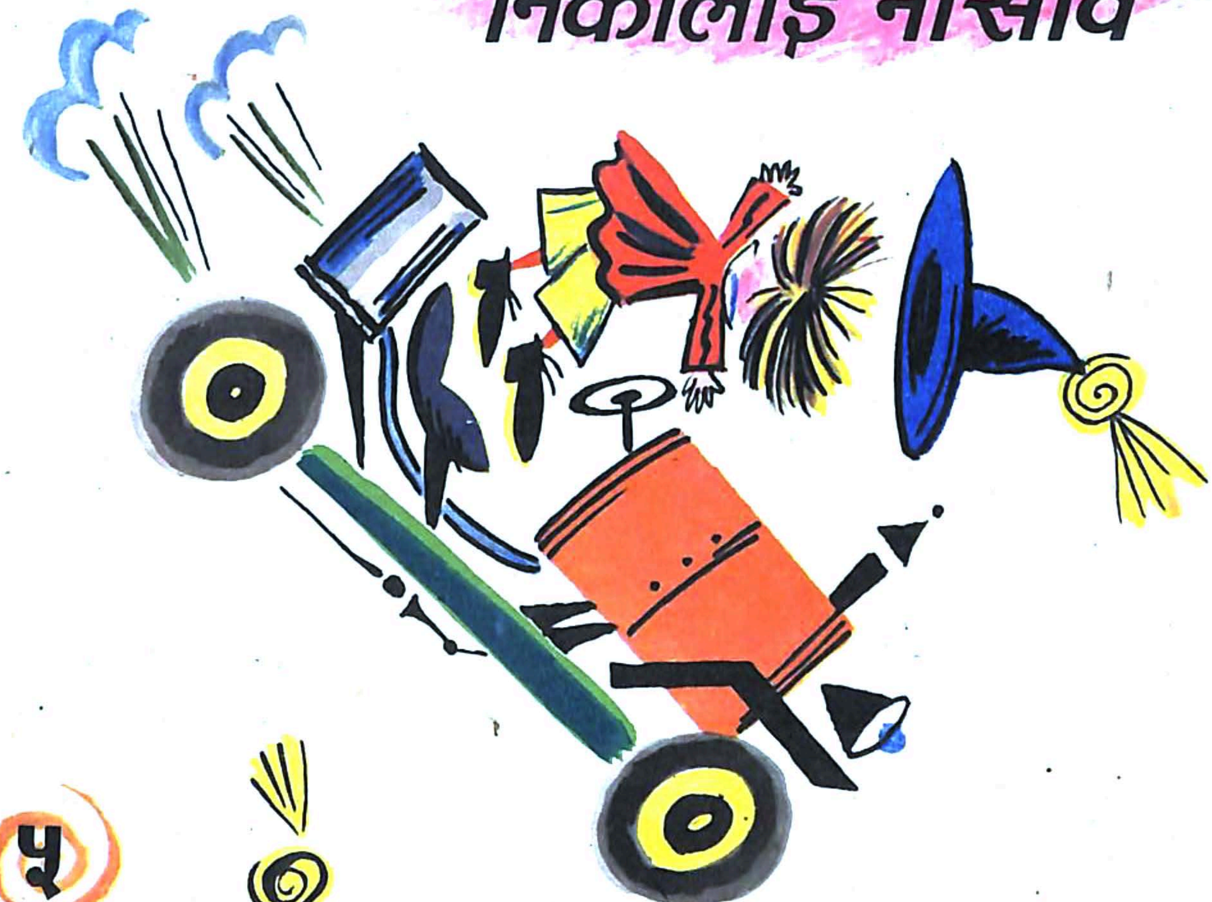
नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



५



नजानू ने गैस की मोटर कैसे चलायी

रादुगा प्रकाशन · मास्को



नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

५

नजानू ने गैस की मोटर कैसे चलायी

अनुवादक:
सरस्वती हैदर

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन
मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५





मिस्त्री मोड़ू और उसका मददगार पेंचू बहुत अच्छे कारीगर थे। वे एक-दूसरे से काफ़ी मिलते-जुलते थे। बस, पेंचू क़द में कुछ लम्बा था और पेंचू क़द में थोड़ा छोटा। दोनों चमड़े की जैकट पहनते थे। उनकी जैकट की जेबों में हमेशा ढिबरी कसने के रिंच, चिमटियां, रेतियां और दूसरे लोहे के औज़ार भरे रहते थे। अगर जैकट चमड़े की न होती तो जेबें कब की फट गयी होतीं। उनकी टोपी भी चमड़े की थी जिसपर मिस्त्रियों के काम करने वाली ऐनक चढ़ी रहती थी। इस ऐनक को वे काम करते समय लगाते थे ताकि उनकी आंखों में धूल या बुरादा न जाये।

मोड़ू और पेंचू दिन-दिन भर अपने कारख़ाने में बैठे काम करते रहते थे और स्टोव, केतलियां, कढ़ाइयां मरम्मत करते रहते थे और जब मरम्मत करने के लिए कुछ भी नहीं होता तो वे छुटकों के लिए साइकिलें और ठेले बनाते थे।

एक बार मोड़ू और पेंचू किसी से कुछ कहे बिना अपने कारख़ाने में बन्द होकर



कोई चीज़ बनाने लगे। पूरे महीने वे आरी चलाते रहे, रन्दा फेरते रहे, कीलें ठोंकते रहे, झाल लगाते रहे। उन्होंने किसी को अपना कुछ भी काम नहीं दिखाया। जब महीना बीत गया तब पता चला कि उन्होंने एक मोटरगाड़ी बनायी है।

यह मोटरगाड़ी शरबत मिले हुए सोडा-पानी से चलती थी। मोटरगाड़ी के बीचों-बीच ड्राइवर की सीट थी और उसके ठीक सामने सोडा-पानी की टंकी लगी थी। इस टंकी की गैस एक नली से होकर तांबे के सिलिंडर में जाती थी और लोहे के पिस्टन को ढकेलती थी। लोहे का पिस्टन गैस के दबाव से कभी ऊपर जाता था कभी नीचे जाता था और पहियों को घुमाता था। ड्राइवर की सीट के ऊपर एक शरबत की बोतल लगी थी। शरबत नली से होकर टंकी में आता था और यंत्र-रचना में ग्रीस का काम देता था।

इस तरह की गैस की मोटरगाड़ी का इस्तेमाल छुटकों में आम हो गया था। मगर इस मोटरगाड़ी में, जिसे मोड़ और पेंचू ने बनाया था, एक बहुत ही अनोखा सुधार था: टंकी के एक ओर बहुत ही मुलायम रबड़ की एक नली लगी थी, जिसमें एक टोंटी लगी





थी, जिससे सैर के दौरान गाड़ी रोके बिना सोडा-पानी पिया जा सकता था।

जल्दबाज़ ने यह गाड़ी चलाना सीख लिया और जो भी उसमें बैठकर घूमना चाहता जल्दबाज़ उसे घुमा देता। वह किसी को मना नहीं करता था।

शरबतिया गाड़ी पर सैर करने को सबसे ज़्यादा पसंद करता था क्योंकि सैर के दौरान वह जितनी बार चाहता शरबत मिला सोडा-पानी पी सकता था। नजानू को भी गाड़ी में बैठकर सैर करने का शौक़ था और जल्दबाज़ उसको अकसर गाड़ी में घुमाता था। मगर नजानू ख़ुद भी गाड़ी चलाना सीखना चाहता था और इसलिए उसने जल्दबाज़ से कहा :

"मुझको मोटर चलानेवाला चक्का संभालने दो। मैं भी गाड़ी चलाना सीखना चाहता हूं।"

"तुम नहीं चला सकते," जल्दबाज़ ने कहा, "यह मोटर है, इसे अच्छी तरह समझना पड़ता है।"



"इसमें समझने की क्या बात है!" नजानू ने उत्तर दिया। "मैंने तो तुम्हें चलाते देखा है। कुछ डंडे इधर-उधर खींचो और स्टीयरिंग के पहिये को घुमाते रहो। बिल्कुल आसान है।"

"लगता बहुत आसान है, मगर असल में यह बहुत कठिन काम है। तुम ख़ुद तो मरोगे ही, गाड़ी भी तोड़-फोड़ डालोगे।"

"अच्छी बात है, जल्दबाज़!" नजानू ने बुरा मानकर कहा, "तुम भी मुझसे कोई चीज़ मांगोगे, मैं भी नहीं दूंगा।"

एक दिन जब जल्दबाज़ घर पर नहीं था तो नजानू गाड़ी में, जो अहाते में खड़ी थी, घुस गया। वह लीवर खींचने और पैडलों को दबाने लगा। पहले तो कुछ भी नहीं हुआ, मगर अचानक मोटर स्टार्ट हो गयी और चल दी। छुटकों ने यह सब अपनी खिड़कियों में से देखा और घर के बाहर भाग आये।

"क्या कर रहे हो," वे चिल्लाये, "टकरा जाओगे!"



"नहीं टकराऊंगा," नजानू ने जवाब दिया और उसी समय गाड़ी कुत्ते के घर की ओर बढ़ी। कुत्ते का घर आहाते के बीचों-बीच बना हुआ था।

धड़-धड़! कुत्ते का घर टुकड़े-टुकड़े हो गया। वह तो कहो अच्छा हुआ कि गुर्रा घर में से बाहर कूद आया, नहीं तो नजानू ने उसे कुचल दिया होता।

"देखा, तुमने क्या कर डाला!" जानू चिल्लाया, "फ़ौरन गाड़ी रोक दो!"

नजानू डर गया। वह चाहता था कि वह गाड़ी को रोक दे। उसने किसी लीवर को खींचा, मगर मोटरगाड़ी रुकने के बजाय और तेज़ भागने लगी। अहाते में एक कुंज था जो गाड़ी के रास्ते में आ गया। धड़-ध-ड़-ड़! कुंज भी तहस-नहस हो गया। नजानू सर से पैर तक चिपटियों से ढक गया। एक तख़्ता उसकी पीठ पर ज़ोर से आकर लगा और दुसरा उसकी गुद्दी पर।

नजानू ने स्टीयरिंग को घुमाकर गाड़ी को मोड़ना चाहा। गाड़ी अहाते में इधर-उधर भाग रही थी और नजानू गले के पूरे ज़ोर से चिल्ला रहा था:





"भाइयो, जल्दी से फाटक खोल दो, नहीं तो मैं अहाते में सब कुछ तोड़-फोड़ डालूंगा!"

छुटकों ने फाटक खोल दिया। नजानू गाड़ी में अहाते से बाहर आ गया और गाड़ी सड़क पर पूरी तेज़ी से भागने लगी। हंगामा सुनकर सारे छुटके अपने-अपने अहातों से बाहर दौड़ आये।

"बचो!" नजानू चिल्लाया और झपटता हुआ आगे निकल गया।

जानू, मोड़ू, कदाचित्, डाक्टर टिकियावाला और दूसरे छुटके नजानू के पीछे भाग रहे थे। मगर कहां! वे तो उसके बराबर पहुंच ही नहीं पा रहे थे।

नजानू पूरे नगर का चक्कर लगा रहा था और उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वह गाड़ी को कैसे रोके।

आखिर में गाड़ी दौड़ती हुई नदी के पास पहुंच गयी। वह चट्टान के ऊपर से लुढ़की





और बड़ी तेज़ी से नीचे गिरने लगी। नजानू उसमें से बाहर उछलकर तट पर जा गिरा और गैस की मोटरगाड़ी पानी में गिरकर डूब गयी।

जानू, मोड़ू, कदाचित् और डाक्टर टिकियावाला नजानू को उठाकर घर ले गये। सब यह समझ रहे थे कि वह मर चुका है।

घर पर उसे बिस्तर पर लिटा दिया गया और तब जाकर नजानू ने अपनी आंखें खोलीं। उसने चारों ओर देखा, फिर पूछा:

"भाइयो, मैं अभी ज़िन्दा हूं?"

"ज़िन्दा हो, ज़िन्दा हो," डाक्टर टिकियावाला ने जवाब दिया, "बस, मेहरबानी करके चुपचाप लेटे रहो। मुझे तुम्हारी जांच करनी ज़रूरी है!"

उन्होंने नजानू के कपड़े उतार दिये और उसकी जांच करने लगे, फिर बोले:

"बड़े ताज्जुब की बात है! सब हड्डियां सही-सलामत हैं। सिर्फ़ कुछ घाव लगे हैं और कुछ चिपटियां घुस गयी हैं।"

"ये चिपटियां तख़्ते की मार से अंदर घुस गयी हैं," नजानू बोला।



"चिपटियों को निकालना पड़ेगा," डाक्टर टिकियावाला ने सर हिलाते हुए कहा।

"उससे दर्द होगा?" डरकर नजानू ने पूछा।

"नहीं, थोड़ा-सा भी नहीं। लाओ, मैं अभी सबसे बड़ी चिपटी निकालता हूं।"

"हाय-हाय!" नजानू चिल्लाया।

"क्या बात है? भला दर्द हुआ कहीं?" ताज्जुब से डाक्टर टिकियावाला ने पूछा।

"और क्या, बड़ा दर्द हुआ!"

"ख़ैर, धीरज से काम लो, सब्र करो। तुमको सिर्फ़ लगता है कि दर्द हुआ।"

"सिर्फ़ लगता ही नहीं है! आई-आई-आई!"

"अरे, तुम तो ऐसे चिल्ला रहे हो जैसे मैं तुम्हें चीरा लगा रहा हूं! आख़िर मैं तुम्हें चीरा तो नहीं लगा रहा।"

"दर्द हो रहा है! ख़ुद ही कहा था कि दर्द नहीं होगा, मगर दर्द हो रहा है।"

"अच्छा, शांत रहो, शांत रहो—बस अब एक चिपटी रह गयी है।"

"हाय-हाय, मत निकालिये! इससे तो अच्छा है कि चिपटी अंदर ही रहे।"

"यह ठीक नहीं है। फोड़ा बन जायेगा।"

"हाय-हाय-हाय!"

"लो, बस, खेल ख़त्म। अब सिर्फ़ आयोडीन लगाना है।"

"उससे दर्द होगा?"

"आयोडीन से नहीं, उससे दर्द नहीं होता है। चुपचाप लेटे रहो।"

"आ-आ-आ!"

"बस, बस! गाड़ी चलाने में बड़ा मज़ा आता है, मगर दर्द सहना अच्छा नहीं लगता।"

"हाय, बड़ी जलन हो रही है!"

"थोड़ी जलन होगी, फिर ठीक हो जायेगा। अभी मैं तुम्हें थरमामीटर लगाऊंगा।"

"ओह, थरमामीटर मत लगाइये, रहने दीजिये।"

"क्यों?"

"दर्द होगा।"

"थरमामीटर लगाने से बिल्कुल दर्द नहीं होता।"

"आप हमेशा कहते हैं दर्द नहीं होता और बाद में दर्द होता है।"

"कैसे बेवकूफ़ हो, क्या सचमुच मैंने तुम्हें थरमामीटर कभी नहीं लगाया?"

"कभी नहीं।"

"ठीक है, तो अब देख लेना कि उसके लगाने से दर्द नहीं होता," डाक्टर टिकियावाला ने कहा और थरमामीटर लेने चले गये।

नजानू बिस्तर पर से कूद पड़ा और खुली हुई खिड़की में से फांदकर अपने दोस्त



चिथड़िया के पास भाग गया। डाक्टर टिकियावाला जब थरमामीटर लेकर वापस आये तो उन्होंने देखा कि नजानू ग़ायब है।

"ऐसे बीमार का इलाज कैसे किया जा सकता है!" डाक्टर टिकियावाला बड़बड़ाये, "उसको ठीक करने की कोशिश करो और वह खिड़की में से कूदकर भाग जाता है। यह भी कोई तरीक़ा है?"



...ТАЛСЯ НА
...ННОМ АВТОМОБИЛЕ

На языке хинди

N. Nosov

HOW DUNNO TOOK A RIDE IN
A SODA-WATER CAR

in Hindi



सोवियत संघ में मुद्रित





अगर नजानू और उसके दोस्तों की कहानी आपको दिलचस्प लगे तो फूलनगर के अनूठे वासियों की आगे की घटनाएं आप इन पुस्तकों में पढ़ सकते हैं:

जानू ने उड़न-गुब्बारा कैसे बनाया

यात्रा की तैयारी

ISBN 5-05-000407-1